गजानन माधव मुक्तिबोध : सृजन और संदर्भ

सम्पादक
डॉ. सतीश यादव

सह-सम्पादक
डॉ. अर्जुन कसबे

Scanned by CamScanner

२६	मुक्तिबोध की कविता में व्यक्त मध्यम वर्ग	प्रा. सुनिल कांबळे	१०१
२७	मुक्तिबोध की काव्य-कला : एक चिंतन	डॉ. भिमराव मानकरे	११३
२८	मुक्तिबोध की कविता में बदलते भारत की तस्वीर	डॉ. अरविंद घोडके	११६
२९	नई कविता और मुक्तिबोध	डॉ. संगीता शरणप्पा उप्पे	११८
३०	मुक्तिबोध की कविता में व्यक्त पूंजीवाद के विरोधी स्वर	डॉ. विजय वाघ	१२१
३१	मुक्तिबोध की कविताओं में व्यक्त आम आदमी की छटपटाहट	प्रा. शेख परवीन बेगम शेख इब्राहीम	१२३
३२	मुक्तिबोध का काव्य- संघर्ष और विषमताओं की ताकत का दस्तावेज	डॉ. विजय शिवराम पवार	१२७
३३	मुक्तिबोध के साहित्य में अभिव्यक्त यथार्थवाद	प्रा. चंद्रकांत एकलारे	१३०
३४	मुक्तिबोध की लंबी कविताएँ	प्रा. आम्रपाली कसबे	१३३
३५	मुक्तिबोध के काव्य में फैंटेसी	प्रा. आर. एम. खराडे	१४०
३६	मुक्तिबोध की कविता में व्यक्त फैंटसी ('ब्रह्मराक्षस' के संदर्भ में)	डॉ. रेणुका मोरे	१४४
३७	'अंधेरे में' कविता में आधुनिकता बोध	डॉ. शोभा ढाणकीकर	१४७
३८	'अंधेरे में' कविता में व्यक्त संवेदना	डॉ. शहाजी चव्हाण	१५१
३९	'अँधेरे में' कविता में प्रस्तुत वर्गभेद	प्रा. शिवसर्जन होनाजी टाले	१५६
४०	मुक्तिबोध की कविता में फैण्टेसी	डॉ. ओमप्रकाश झंवर	१६०
४१	मुक्तिबोध की कविताओं में फैंटेसी ('ब्रह्मराक्षस' और 'अंधेरे के संदर्भ में)	डॉ. अनिता शिंदे	१६३
४२	गजानन माधव मुक्तिबोध और ब्रह्मराक्षस	डॉ. सुभाष प्रल्हादराव इंगळे	१६५
४३	मुक्तिबोध की कविता में फैण्टेसी	प्रा. भारती नकुलराव कांबळे	१६८
४४	मुक्तिबोध की कविता में फैण्टेसी	डॉ. सी. जी. कडेकर	१७३
४५	गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता में फैंटेसी	डॉ. गणपत श्रीपतराव माने	१७६
४६	मुक्तिबोध की कविता में फैंटेसी	डॉ. आर. एस. पवार	१८०
४७	मुक्तिबोध के काव्य में 'फैंटेसी'	प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे	१८३
४८	मुक्तिबोध की लंबी कविता : 'अंधेरे में' के संदर्भ में	ईश्वरप्रसाद आत्माराम मांडे	१८६
४९	मुक्तिबोध की काव्य भाषा	डॉ. श्रीरंग वडुमवार	१८८
५०	मुक्तिबोध की काव्य भाषा	डॉ. रामकृष्ण बदने	१९५
५१	मुक्तिबोध की भाषा-शैली	डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की	१९८
५२	मुक्तिबोध की काव्य-भाषा	किशोर बळीराम लोहकरे	२०२
५३	मुक्तिबोध के काव्य में व्यंग्य	डॉ. सूर्यकांत शिंदे	२०६
५४	मुक्तिबोध की काव्य भाषा	डॉ. मुरलीधर अच्युतराव लहाडे	२०९
५५	मुक्तिबोध की कविता में व्यक्त पूँजीवाद के विरोधी स्वर	प्रा. नागराज उत्तमराव मुळे	२१२
५६	गजानन माधव मुक्तिबोध और उनकी कविता	डॉ. विजया गाढवे	२१४

Scanned by CamScanner

मुक्तिबोध के काव्य में 'फैंटेसी'

प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

गजानन माधव मुक्तिबोध ने मानव जीवन की जटिल संवेदनाओं और उसके अन्तर्द्वन्द्वों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के लिए 'फैंटेसियों' का कलात्मक उपयोग किया है। 'फैंटेसियों' में कल्पनाओं और विचारों की परतें एक के बाद एक खुलती जाती हैं और कवि की मानसिक स्थिति का सही बोध पाठकों के समक्ष उपस्थित होता है

'फैंटेसी' शब्द का निर्माण यूनानी शब्द 'फैंटेसियाड' से हुआ है। जिसका अर्थ है - मनुष्य की वह क्षमता जो संभाव्य संसार की सर्जना करती है। मुक्तिबोध के अनुसार 'फैंटेसी'मन की निगुढ वृत्तियों का अनुभूत जीवन समस्याओं का, इच्छित जीवन स्थितियों का प्रक्षेप है । मुक्तिबोध की अन्य कविताओं में 'फैंटेसियों' पर है, जिसमे ब्रम्हराक्षस, अंधेरे में, लकडी का रावण आदि।

मुक्तिबोध स्वयं 'फैंटेसी' पर आपने विचार व्यक्त करते हुए कहते है कि , वह स्वप्न के भीतर एक स्वप्न, विचारधारा के भीतर और प्रच्छन्न विचारधारा, कथा के भीतर एक और कथ्य, मस्तिष्क के भीतर एक और मस्तिष्क, कक्ष के भीतर एक और गुप्त कक्ष है।

'चांद का मूँह टेढा है।' मुक्तिबोध का जो कविता संग्रह है उनमे दो कविताएं **ब्रम्हराक्षस** एवं **अंधेरे में** अपनी 'फैंटेसी' के कारण अधिक चर्चित रही है। यहां इन दोनो कविताओं के मनचण्य को उसकी 'फैंटेसी' को व्यक्त किया जा रहा है।

ब्रम्हराक्षस -

इस कविता में ब्रम्हराक्षस माध्यम वर्ग की बौध्दिक चेतना का प्रतीक है। इस चेतना के कारण वह मुक्ति के लिए छटपटाता है। जीवन जीते समय वह जो ज्ञान अर्जित करता है उसी से अपनी मुक्ति का पथ खोजता है। पर मुक्ति के इस प्रयास में वह और भी उलझता जाता है । यहां संकेत यह है कि व्यक्ति प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक नहीं बना सकता उसे क्रिया में नहीं ला सकता । परिणामतः वह भटकता रहता है। निराशा (कुण्ठा) का शिकार हो जाता है। यहां कवि कहना चाहता है कि संचित अनुभव और ज्ञान तभी सार्थक होता है, जब वह निरंतर विकसित एवं प्रवर्धित होता रहे और भावी ज्ञान की आधारशिला बने। यदि ऐसा नही होगा तो अतीत का ज्ञानात्मक संवेदन और अनुभव व्यर्थ प्रमाणित हो जाएगा ।

मूलबध्द संस्कारों के कारण विकसित पाप छाया से आत्मशुध्दि के लिए वह निरन्तर बावडी में स्नान करता हुआ । अपनी देह घिसता रहता है । किन्तु उसका मैल कम होने की बजाय बढता ही जाता है - गहन अनुमानिसा / तन की मलिनता / दूर करने के लिए प्रतिफल / पापछाया दूर करने के लिए, दिन रात / स्वच्छ करने / ब्रम्हराक्षस / घिस रहा है देह / हाथ के पंजे बराबर / बांह छाती मूंह छपाछप / खुब करते साफ / फिर भी मैल।

बुध्दिजीवी की यही विडम्बना हैकि । वह प्रत्येक विचारक के मत की मनोनुकूल व्याख्या

Scanned by CamScanner

करता हुआ उसी में उलझा रहता है । उसका अधूरा ज्ञान उसे दम्भी बना देता है । इसलिए तिरछी पडी रवि रश्मि को देखकर उसे लगता है कि, सूर्य भी उसे झुककर प्रणाम कर रहा है।

वस्तुतः ब्रम्हराक्षस की ट्रेजिडी आज के बुध्दिजीवी की ट्रेजिडी है । वह ज्ञानोपार्जन करके भी मनोवांछित परिवर्तन नहीं कर पाता है। इस प्रक्रिया में वह जो प्रयत्न करता है, वे असफल हो जाते हैं। परिणामतः वह निराशा एवं कुण्ठा से भर जाता है। उसकी मूल विडम्बना यह है कि, वह उपलब्ध ज्ञाने को क्रिया में नही बदल पाता है। परिणामतः अन्तः बाह्य संघर्ष मे जुझता रहता है।

मुक्तिबोध की धारणा थी कि, अतीत से पूरी तरह टूटकर कोई भी वर्तमान सार्थक भविष्य का रुप नही ले सकता है। इस कविता में वे इसी विचारधारा को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करना चाहते है। ब्रम्हराक्षस अतीत की बौध्दिक चेतना दे जो बावडी रुपी वर्तमान समूह मन में रहता है और अपनी आत्मा के अन्वेषण में रत है। मुक्तिबोध अपनी 'फैंटेसी' में प्रतीकों का माध्यम ग्रहण करते है वह सामान्य भाष्या में नही अपितु प्रतीकों और बिम्बो की भाषा में बोलते है।

अंधेरे में - मुक्तिबोध की यह लम्बी कविता लगभग ४५पृष्ठों की है। उनके काव्य संकलन **चाँद का मूँह** टेढा है। में संकलित है। इस कविता का प्रारंभ भी कविने 'फैंटेसी' परक वातावरण मे किया है।वृक्षों के अंधेरे में छिपी हुई किसी एक/तिलस्मी स्नेह का शिलाद्वार / खुलता है धड से / घुमती है लाल-लाल मशाल अजीब सी अन्तराल बिवर के तम में / लाल-लाल कुहरा।

इस कविता में दो रक्तलोक स्नात पुरुष है। इनमें से एक तो अंधेरे कमरों मे चक्कर लगा रहा है और दूसरा बाहर तालाब की लहरों मे अपना चेहरा देखता हुआ भीतर आने के लिए सांकल बजा रहा है । वस्तुतः ये दोनो रक्तलोक स्नात पुरुष क्रमशः सामाजिकता एवं कविता के प्रतीक है । मुक्तिबोध इन प्रतीकों के माध्यम से यह कहना चाहते है कि, मनुष्य की पूर्ण संभावनाएं तभी प्रकट होंगी जब कविता सामाजिकता को ग्रहण कर ले और समाज कविता कों अंगीकार कर ले। दूसरे शब्दा मे दोनो का अन्योन्यश्रित सम्बंध है इस कविता में जिस अंधेरे का उल्लेख है। वह यह संकेत करता है कि, आज सामाजिकता अव्यवस्था से घिर गई है। कवि के मानस में भी अंधेरा भर गया है। उसका व्यक्तित्व भी अन्धकारग्रस्त है। उसे आत्मान्वेषण करते हुए उपलब्ध जीवन सत्यों से आत्म विस्तार करना होगा तभी यह अंधेरा दूर होगा । उसे **मैं** से **हम** की ओर जाना होगा। तभी आत्मशुध्दी होगी और तभी प्रकाश होगा। निश्चय ही यह कवि के आत्म परिष्कार एवं आत्म विस्तार को द्योतित करने वाली यह 'फैंटेसी' है। यहां रक्तालोक स्नात पुरुष (कवि) का प्रतीक माना जाता है जो मध्यमवर्ग की आदर्शवादिता को दृढता से धारण किए हुए है और जिसकी प्रवृत्ति समझौतावादी नहीं है।

मुक्तिबोध की कुछ अन्य कविताएं - दिमागी गुहान्हन्धकार का ओरांग उटांग और लकडी का बना रावण भी 'फैंटेसी' परक कविताएं है। ओरांग उटांग से कवि का अभिप्राय मन की भीतरी परतों में दबे अवचेतन से है। उदा. कोठे के सांवले गुहान्धकार में है /मजबुत संदुक /दृढ भारी -भरकम / और उस संन्दु के भीतर कोई बन्द है। यक्ष, या कि ओरांग उटांग हाय /

लकडी के बने रावण - को डॉ. इंद्रनाथ मदान ने उस काव्यनायक का प्रतीक माना है। जो

Scanned by CamScanner

अपने परिवेश से कट गया है। वह शिखर पर अकेला खडा है । अपने मोह से घिरा हुआ है, इसे यदि मार्क्सवादी दृष्टि से देखें तो यह रावण पूंजीवादी वर्ग का प्रतीक है जो बस अब नष्ट होने ही वाला है - मैं मन्त्र की लित-सा भूमि में गडा-सा /जड खडा हूं /अब गिरा तब गिरा /इसी पल कि उसी मल।

समग्रतः से यह कहा जा सकता है कि, मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं में फैंटेसी का सफलतापुरक प्रयोग किया है । ये फैंटेसियां उनके अन्तर्द्वद्वग्रस्त मन से उद्‌भूत है । किन्तु इनका भावात्मक उद्देश्य तथा संवेदनात्मक दिशा है । भले ही फैंटेसी मानसिक प्रक्रिया हो, किन्तु सामाजिक यथार्थ से जुडकर उसने अपनी उपयोगिता सिध्द कर दी है ।

संदर्भ संकेत

१) मुक्तिबोध की लम्बी कविता संवेदना और शिल्प - डॉ. प्रकाश जेधे
२) मुक्तिबोध की कविता - डॉ. निर्मला शर्मा
३) मुक्तिबोध का गद्य साहित्य - मोतीराम वर्मा
४) मुक्तिबोध कवि और काव्य - डॉ अय्युब पठाण
५) मुक्तिबोधः काव्य-सृजन - डॉ. इन्दु वशिष्ठ

■ ■ ■

Scanned by CamScanner

Shaurya Publication
Kapil Nagar, Latur
mob. 8149668999

978-93-83672-47-9

Scanned by CamScanner